संस्कार मिलन का आधार - फेथ, रिस्पेक्ट और सरल नेचर

आज अपनी प्यारी दादी जानकी जी का यादप्यार और समाचार लेते हुए बाबा के पास पहुंची तो बापदादा ने मेरे साथ ही दादी जानकी और सर्व निमित्त बनी हुई फारेन सेवा की मुख्य बहनों को भी इमर्ज किया और कहा देखो ड्रामा अनुसार मैजारिटी विदेश सेवा में भी निमित्त भारत के ही बच्चे सन्देश देने अर्थ गये हैं और हर एक अपने अपने स्थान पर सेवा अच्छी कर रहे हैं। उन्हों को भी आपस में मिलने, लेन-देन करने का समय मधुबन में ही मिलता है। बापदादा बच्चों का लेन-देन का दृश्य देख खुश होते हैं और सदा मुबारक देते हैं। ऐसे ही आपस में नजदीक आते मिलते जुलते सब एक दो के बिचारों और विशेष संस्कारों में भी एक हो रहे हैं और हो ही जायेंगे।

बापदादा तो बच्चों के संस्कार मिलन की महारास देखने चाहते हैं। उसका आधार है एक दो में फेथ, रिस्पेक्ट और सरल नेचर। बापदादा देखते हैं कि दिनप्रतिदिन एक दो के नजदीक आ ही रहे हैं। समय अनुसार होना ही है। ऐसे कहते बापदादा ने सभी विशेष निमित्त सेवा अर्थ बहनों को एक एक को अपनी बांहों के झूले में बहुत स्नेह से झुलाते दृष्टि दी। बाद में दोनों दादियों को भी दोनों बांहों में समाए खूब झुलाया और उनके बाद सबको अपने में समा लिया।

फिर हमने अपने को अकेला ही बापदादा के सामने देखा और बापदादा ने पूछा और क्या समाचार है। मैंने दादी जानकी का समाचार सुनाया कि कई देशों में समय अनुसार अब सेवा लिए जाना ठीक रहेगा? क्योंकि अब लड़ाई का वायुमण्डल तो फैल रहा है। तो बाबा बोले बच्ची, ऐसे वायुमण्डल में भय और टेन्शन और ही बढ़ता है इसलिए अगर कोई ऐसा अथॉरिटी वाला निमन्त्रण पॉवरफुल हो, फिर निमन्त्रण अनुसार ही बच्ची जानकी वा जयन्ती वा दूसरा कोई जा सकता है।

कई चल रहे सेन्टर्स में भी उमंग-उत्साह बढ़ाने की आवश्यकता है? बाबा बोले, अब टीचर्स की मीटिंग होगी तो उस समय एक दो को सहयोग देने लेने का वा जानकी बच्ची के चक्कर का प्रोग्राम आवश्यक है तो बना सकते हैं लेकिन तबियत का ध्यान ज़रूरी है। बीच-बीच में रेस्ट भी ज़रूरी है।